7

वैदिक देवता

प्रस्तावना

ब्राह्मण वेदविधि का अनुसरण करके यज्ञादि करते हैं, और उससे स्वर्गादि प्राप्ति, मानवों के अच्छे जीवन तथा प्राकृतिक दुर्योग आदि से स्वयं की तथा दुसरे की रक्षा, इत्यादि रूप फल प्राप्त करते हैं। और वह फल देवों की सन्तुष्टी के लिए देव ही पाते हैं। अत: वेदोक्त कर्म का लक्ष्य देवों को सन्तुष्टि प्रदान करना है। कौन देव? इस विषय में इस पाठ में विस्तार से आलोचना प्रस्तुत है। देवों के स्थान भेद से तथा काल भेद से भु, अन्तरीक्ष तथा द्युलोक के देव होते है इसका विवरण इस पाठ में प्राप्त होता है। देवों में कौन मूल है इस विषय में यास्क और कात्यायन ने अपने अपने मत दिए है। वे इस अध्याय में बताए जाएंगे। देव साकार है या निराकार इस विषय में पण्डितों के कुछ अभिप्राय है, वे भी यहाँ बताए गये है। कुछ मुख्य देव हैं यथा- इन्द्र, अग्नि, रुद्र, वरुण इत्यादि। और पाठान्त में इन देवों के स्वरूप विषय में संक्षेप में आप जान सकेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- देवताओं का सामान्य परिचय जान पाने में;
- देवताओं का विभाजन जान पाने में;
- देवता विषय में यास्क मत और कात्यायन मत जान पाने में;
- देवता के साकार चिन्तन कर पाने में।

- इन्द्र का स्वरूप जान पाने में;
- अग्नि के स्वरूप को जान पाने में;
- वरुण का स्वरूप जान पाने में;
- अश्विन का स्वरूप तथा रुद्र का स्वरूप को जान पाने में।

7.1 देवताओं का सामान्य परिचय

7.1.1 देवता पद का निर्वचन

दिवादिगणीय दिव्-धातु से अच्प्रत्यय होने पर देवः ऐसा रूप सिद्ध होता है। दीव्यति प्रकाशते इति देवः। दिव्-धातु के क्रीडाविजिगीषादि बहुत अर्थ है। यहाँ द्युति अर्थ वाली या कान्ति अर्थ वाली ग्रहण की है। देव शब्द से तल् प्रत्यय करने पर देवता बनता है। देव और देवता शब्द दोनों पर्याय हैं।

देव शब्द के निर्वचन के प्रसङ्ग में निरुक्तकार यास्काचार्य कहते है - ''देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्योतनाद् वा भवति'' इति। अर्थात् जो दान करता है, जो चमकता है और जो अन्य को प्रकाशित करता है वह देव है। यज्ञादि में वेदमन्त्रों से देवों की स्तुति की जाती है। लेकिन उन देवों द्वारा यजमान की अभीष्ट की सिद्धि होती है। इस प्रकार से देवकामना को पूरा करने वाले हैं। मन्त्रों के देव चैतन्य स्वरूप है। देवों का प्रकृत स्वरूप ब्रह्म ही है और ब्रह्म स्वयं प्रकाश स्वरूप है। वो ब्रह्म एक ही है तथ भिन्न रूप से प्रकाशित होता है। कहा भी है - **''एकं सद्विप्रा बहुध वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः''** इति। और उसके प्रकाश से ही ये समस्त जगत प्रकाशमान है। अतः द्योतनात् देवः ये सिद्ध हो जाता है।

वेद में बहुत से देवों के नाम मिलते हैं। वैदिक साहित्य में प्रधान रूप से दो ग्रन्थों में वेद के देवता तत्व का प्रतिपादन करते हैं। एक तो शौनक द्वारा रचित बृहद्देवता ग्रन्थ, और दूसरा यास्कर्षि विरचित निरुक्त का दैवत काण्ड। वेद का प्रत्येक मन्त्र किसी देव को उद्देश्य करके ही प्रयुक्त है। अतः वेद के सही ज्ञान के लिए देवता ज्ञान आवश्यक है। बृहद्देवता में कहा है-

वेदितव्यं दैवतं हि मन्त्रे मन्त्रे प्रयत्नतः।
दैवतज्ञो हि मन्त्राणां तदर्थ मवगच्छति॥ इति॥

अर्थात् वेद के प्रतिमन्त्र के देवता का ज्ञान प्रयास पूर्वक अर्जित करना चाहीए। क्योंकि देवता ज्ञान होने पर ही मन्त्र का अर्थहृदयगत होता है। वेद में बहूत से देवों के तथा बहुत सी देवियों के नाम मिलते हैं। कुछ देव इस प्रकार है - अग्नि, वायु, इन्द्र, सूर्य, विष्णु, सोम, वरुण, पूषा, मरुत्, रुद्र, सविता, अर्यमा, अपान्नपात्, अश्विन, आदित्य, द्यौ,

ऋभु, यम आदि अनेक है। कुछ देवियाँ इस प्रकार है – वाक्, उषा, अदिति, रात्रि, पृथ्वी, सरस्वती, श्री, धिषणा जैसी अनेक है। कुछ देवता के नाम द्वन्द्व समास में सर्वदा कीर्तित है यथा – मित्रावरुणौ, इन्द्राग्नी, सूर्याचन्द्रमसौ, द्यावापृथिव्यौ, अग्नीषोमौ इत्यादि। अश्विन देवता सदा युगलरूप में तथा यमजरूप मर कल्पित है, अतः अश्विनौ ये द्विवचन प्रयोग दिखता है। प्राचीन रोम के क्यास्टर (Castor) तथा पोलुक्स् (Pollux) जिस प्रकार युगल है वैसे ही अश्विन देव भी युगल रूप में स्वीकृत है। विश्वे देवाः ये सर्वदा बहुवचनान्त रूप में प्रयुक्त है, क्योंकि ये गोष्ठी वाचक और बहुदेवता वाचक शब्द है।

पाठगत प्रश्न

712. बृहद्देवता-ग्रन्थ किसकी रचना है ?

713. कुछ देवों के नाम लिखो।

714. कुछ देवियों के नाम लिखो।

715. द्वन्द्व समास से कौनसे देव कहलाते हैं ?

716. विश्वेदेवाः यहां बहुवचन क्यों है ?

7.2 देवताओं का विभाजन

निरुक्तकार यास्क के मत में वेद के देव स्थान भेद और काल भेद से तीन प्रकार में विभक्त है। यथा भूलोक के देव, अन्तरिक्ष लोक के देव और द्युलोक के देव। वहां अग्नि, आप, पृथ्वी, सोम भूलोक के देव है। इन्द्र, मरुत्, अपान्नपात् (विद्युत्), पर्जन्य जैसे अनेक अन्तरिक्ष के देव है। सूर्य मित्र, वरुण, द्यु, पूषा, सविता, आदित्य, अश्विनी कुमार, ऊषा, रात्रि इत्यादि देव द्युलोक के हैं। उन तीनो में प्रत्येक लोक का एक देव प्रधान है और अन्य उसकी भिन्न अभिव्यक्तियां है। भूलोक के देवों में **अग्निः**, अन्तरिक्ष के इन्द्र और द्युलोक के सूर्य ये मुख्य देव हैं। यास्क ने भी कहा है – ''तिस्र एवं देवता इति नैरुक्ता अग्निः पृथ्वी स्थानो वायुर्वेन्द्रो वाऽन्तरिक्षस्थानः सूर्यो द्युस्थानः'' इति। इन तीनों देव के भिन्न कर्म और भिन्न विशेषण हैं अन्य देव के नाम करण के अनुसार प्रयोजन है। अग्नि के विशेषण भेद से या कार्य भेद से वैश्वानर, जातवेदा, नाराशंस, सुसमिद्ध, तदनुपात् इत्यादि नाम, और भी वायु से मातरिश्वा, इन्द्र, रुद्र, अपान्नपात् अनेक देवों के नाम तथा सूर्य से आदित्य, विष्णु, मित्र, वरुण, पूषा, भग, ऊषा, अश्विनीकुमार, सविता ये नाम उत्पन्न हुए। यास्क का ये मत कपोल कल्पित नहीं है, अपितु ऋग्वेद में इस मत का समर्थन किया है, ''सूर्यो नो दिवस्पातु वातोऽन्तरिक्षादग्निर्नः पार्थिवेभ्यः'' (10.151.1) इति। ऋग्वेद में सभी देव के नाम नहीं उल्लेखित है, केवल तीन नाम उल्लेखन से उनका मुख्यत्व प्रतिपादित होता है। देवों का निवास स्थल पृथ्वी, अन्तरिक्ष

द्युलोक यथाक्रम से भूः, भुवः, स्वः इन नामों से जाने जाते है। वैदिक ग्रन्थ में देवों की संख्या तैंतिस 33 स्वीकृत है। वहां 11 भूलोक में, 11 अन्तरिक्ष में और 11 द्युलोक में रहते है। शतपथ ब्राह्मण में भी 33 देवों को स्वीकृत किया गया है। किन्तु ऋक्संहिता में 3.1.9 तथा 10.52.6 संख्या के मन्त्र में 3339 देव है ऐसा कहा गया है। पौराणिक काल में ये संख्या 33 करोड़ तक हो गई थी। मुख्य अग्नि वायु और सूर्य में अग्नि निकटतम (अग्निर्वै देवानामवमः), तथा सूर्य अधिक दूर (सूर्यो देवानां परमः)। अन्य देवों का इन्ही दोनों में अन्तर्भाव हो जाता है। सूक्ष्म विचार से ज्ञात होता है कि वे तीनों देव परमात्मा की ही तीन अभिव्यक्तियां है। देवता के विचार में निरुक्त में यास्क ने कहा है कि -देवतायाः एक आत्मा बहुध स्तूयते (निरुक्ते 7-4)'। जैसे एक ही देह के भिन्न-भिन्न अङ्ग होते है वैसे ही एक ही अङ्गि आत्मा के वे भिन्न देव अङ्ग स्वरूप होते हैं – एक ही आत्मा के अन्य देव प्रत्यङ्ग होते हैं। वेद की संहिता में भी देवों का स्वरूप स्पष्ट बताया गया है–

एकं सद्विप्रा बहुध वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः। (ऋ. 1.164.64)
एकं सन्तं बहुध कल्पयन्ति। (ऋ. 10.114.5)

ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 55 वें सूक्त के प्रत्येक मन्त्र के अन्तिम पाद में -'महद्देवानामसुरस्त्वमेकम्' ऐसा कहा गया है। असून् प्राणान् राति ददाति इति असुरः, प्राण को देने वाला वह परमात्मा ही है। ऋग्वेद के अपर मन्त्र में कहा है - 'एकं वै इदं विभु बभूव सर्वम्' इति। परमात्मा से ही देवों की उत्पत्ति हुई है- शुक्लयजुर्वेद में स्पष्ट शब्दों में कहा है - 'एतस्यैव सा विसृष्टिरेष उ ह्येव सर्वे देवाः इति। इस प्रकार ये सब देव एक ही परमात्मा के अंश है, ऐसा ज्ञान होता है।

वेद में वर्णित देव किसी न किसी पार्थिव वस्तु या पार्थिव प्राकृतिक पदार्थ के प्रतीक है। प्रत्येक पार्थिव पदार्थ की चौतन्य सत्ता या अधिष्ठाता कोई न कोई देव होता है। यथा 'यमान पार्थिव अग्नि का चैतन्यमयी देवता अग्नि, चक्षुर्ग्राह्य सूर्य का अधिष्ठाता सूर्यदेव, आदित्यदेव, या सविता हैं। एवं पार्थिव पवन वायु, झञ्झावात आदि के देव मरुत हैं, विद्युत के अपान्नपात्, मेघ के पर्जन्य हैं। सूर्य का गगन में स्थान भेद से तथा पृथ्वी पर आवर्तन होने से, स्थान भेद से और काल भेद से सूर्य के मित्र-वरुण-सवितृ-भग-पूषा-आदित्यादि नाम होते है। वज्र के देव रुद्र, इस विषय में वेद में बहुत वर्णन प्राप्त होता है। वज्र से सभी जीव डरते हैं, शिर पर वज्राघात से मृत्यु ही हो जाती है। अत एव रुद्र का मन्त्र में सदैव विद्रूप और संहारक रूप में भीषण वर्णन मिलता है। रुद्र की शिवमूर्ति ऋग्वेद में नही है। शुक्लयजुर्वेद में रुद्राष्टाध्ययी में रुद्र का भीषण रूप तथा कल्याण रूप दोनों को वर्णित किया गया है। 'घोरञ्च मे घोरतरञ्च मे' यहाँ भीषणत्व तथा 'शिवाय च शिवतराय च' यहां कल्याणत्व घोषित है।

पाठगत प्रश्न

717. भूलोक के देव कौन है ?

718. अन्तरिक्ष के देव कौन है ?

719. द्युलोक के देव कौन है ?

720. असुर शब्द का अर्थ क्या है ?

721. देवों का निवास स्थान विषय में निरुक्त में क्या कहा गया है ?

722. वायु कौन से देव उत्पन्न करते है ?

723. अग्नि को निकटत्व कहने वाली श्रुति कौन सी है ?

724. वज्र के देव कौन है ?

725. रुद्र का कल्याणत्व किस श्रुति से प्रतीत होता है ?

7.3 देवता विषय में यास्कमत और कात्यायनमत

निरुक्तकार यास्क के मत में सभी देवों का मूल **अग्निः** ही है। उनके मत का समर्थन ब्राह्मण ग्रन्थ में स्थित प्रमाण से मिलता है 'अग्निः सर्वा देवताः' इति। पार्थिवाग्नि ही अन्तरिक्ष में इन्द्ररूप में तथा विद्युद्रूप में द्युलोक में सूर्यरूप में प्रकटित होती है। द्युलोक के सभी देव सुर्य के तथा अन्तरिक्ष के सभी इन्द्र के नाना प्रकाश स्वरूप है। सूर्य और इन्द्र अग्नि के रूप भेद मात्र है। त्रिलोक के सभी देवता अग्नि के नाना अभिव्यक्ति मात्र है ऐसा मान के अग्नि एक ही देव है इसके निरूपण के लिए यास्क ने ऋग्वेदीय मन्त्र उद्घृत किया – 'तमू अकृण्वन् त्रेधा भुव' इति (10.88.10)। ये अग्नि तीन प्रकार की है अर्थात् पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक ये तीनों स्थान भेद से भिन्न है। बृहद्देवता ग्रन्थ में देखें तो –

इहाग्निभूतस्तु ऋषिभिर्लोके स्तुतिभिरीडितः।
जातवेदा स्तुतो मध्ये स्तुतो वैश्वानरो दिवि॥ इति॥

कात्यायन ने इस मत का समर्थन नहीं किया। 'सर्वानुक्रमणी' इस ग्रन्थ में वैदिक देवता का मूल सूर्यःया आदित्य है ऐसा कहा है। सभी देवों की उत्पत्ति का बीज सूर्य का ही लक्षण तथा वर्णन प्राप्त होता है। निःसन्देह रूप से उन्होंने स्पष्ट कहा है – 'एक एव महानात्मा वेदे स्तूयते, स सूर्य इति व्याचक्षते' इति, तथा एकैव देवता स्तूयते आदित्य इति' इति च। आदित्य के कार्य या गुणों के आधार पर देवों के नाम हुए। वैसे ही दिवस में आदित्य का नाम सूर्य, रात्री में वह अकृश्य होता है तब वह वरुण है। रात्रि

समाप्ति पर अल्प अन्धकार में ये सविता है। अन्धकार के नष्ट होने पर यह अश्विन है। सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा रक्त वर्ण युक्त होती है तब ये उषा कहलाता है। उदित मात्र होने तक ये भग है। मध्याह्न में गगन मण्डल के मध्य भाग में जब होता है तब ये विष्णु कहलाता है - इसी प्रकार 12 आदित्य होते है। ऐतरेय ब्राह्मण में आदित्य का अस्त होना वर्णित है - 'आदित्यो वा अस्तं गच्छन् अग्नावनुप्रविशति' इति।

यहाँ यास्क और कात्यायन के मत में समन्वय प्रदर्शित किया है। यास्क के अग्नि का तथा कात्यायन के सूर्य का सकल देवतात्व परस्पर विरुद्ध होने पर भी यास्क द्वारा उनका समन्वय प्रदर्शित किया है। देवता के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि – मनुष्यों में जैसे पिता से ही पुत्र की उत्पत्ति है वैसे देवों में नहीं है। क्योंकि देव इतरेतर जन्मा तथा इतरेतर प्रकृति वाले होते है, अर्थात् परस्पर संयोग से उत्पन्न होते है। श्रुति में भी कहा है कि - 'अग्नेर्वा आदित्यो जायते' इति। अग्नि से जैसे सूर्य का जन्म वैसे ही सूर्य से आदित्य का जन्म हुआ ऐसा तात्पर्य है। पदार्थ विज्ञान की दृष्टि से भी यास्क ने ये प्रमाणित किया है - सूर्य की रश्मि काँच या मणि का भेदन कर शुष्कतृण के उपर गिरती है तो अग्नि उत्पन्न होती है। इस प्रकार सूर्य अग्नि का जनक हुआ। जैसे मिट्टी से निर्मित घट शुरई थाली आदि परस्पर भिन्न हैं परन्तु मिट्टी की दृष्टि से सभी एक ही है परन्तु देव की दृष्टि से सभी देव भिन्न हैं परन्तु एकत्व की दृष्टि से सभी में परमात्मा का स्वरूप निहित है।

पाठगत प्रश्न

726. तमू अकृण्व त्रेधा भुवे इसका क्या तात्पर्य है ?

727. बृह द्देवता में अग्नि का निवास त्रय सूचक श्लोक कौन सा है ?

728. अग्नेर्वा आदित्यो जायते इससे क्या ज्ञात होता है ?

7.4 देवता का साकार और निराकार

देव साकार है या निराकार, शरीर धारी है या अशारीरक इस विषय में नाना दर्शनों में नानानिरूक्तकारों ने नाना मत बताएं हैं। वैदिक काल में भी इसमे मत भेद था आलोचना द्वारा साकार और निराकार का समन्वय प्रदर्शित किया गया है। यास्क ने साकार या शारीरिक इस अर्थ में पुरुषविध शब्द और निराकार या अशारिक इस अर्थ में अपुरुषविध शब्द प्रयुक्त किया है। वहां देवः पुरुषविधः साकारः इस विषय में युक्त से आलोचना करते है -

1) देवों का शरीर पुरुष के शरीर के समान नही होता है तो कर्मादि भी नही होने चाहिए। तब उनकी स्तुति भी उन्माद प्रलापवद् ही होनी चाहिए। और फिर मन्त्र

भी निरर्थक होने चाहिए। और भी ऋग्वेद में बहुत से संवाद सूक्त हैं यथा सरमापणि संवाद, ऊर्वशी पुरुरवा संवाद, यमयमी संवाद इत्यादि। सूर्य सूक्त में सूर्य के विवाह में बहूत से देवों का आवाह्न दिखाई देता है। इस प्रकार देवों का शरीर चैतन्य नही होता है तो आलाप, विवाह या प्रणय कथा की प्रासंगिकता कैसे हो सकती है ?

2) वेदमन्त्रों में मनुष्य में समान देव के भी पाणि-पाद या नयन -कर्ण इत्यादि सम्यक् वर्णित हैं। जैसे- शुक्लयजुर्वेदीय पुरुषसूक्त में वेद पुरुष का बड़ा ही विस्तृत वर्णन है।

3) वेद में देवों के अश्व, रथ, वज्र, गृह, पत्नी, दुर्ग आदि का भी वर्णन प्रमाणित करता है कि मनुष्य के समान देव भी शरीरधारी हैं। इन्द्र और सूर्य में अश्व का, रूद्र का वज्र निर्माण, इन्द्र का वज्र प्रयोग, अग्नि इन्द्र सविता देव की रथ की कहानियाँ वेद में बहुत प्राप्त होती है। अग्नि इन्द्र रुद्र का यथा क्रम अग्नायी-इन्द्राणी-रुद्राणी स्त्रीयों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

4) मनुष्य जैसे कर्मादि करते हैं, वेद में देवों के भी कर्मादि वर्णित हैं। जैसे इन्द्र सोम रस पीते है, युद्ध करते हैं, वृत्र को मरते हैं और अश्व चलाते हैं। अग्नि यज्ञ की हवि ग्रहण करते हैं, मरुत वंशीं बजते हैं, रुद्र भीषण गर्जन करते हैं, विष्णु विशाल नेत्रों से समग्र जगत् का निरीक्षण करते हैं, ऐसी कथाएं वेदों में मिलती हैं।

इस प्रकार कुछ लोग इस युक्ति चतुष्टय से देवों का साकारत्व प्रतिपादित करते है और कुछ इन युक्ती का खण्डन करके देवों का निराकारत्व प्रमाणित करते हैं। और वे युक्तियाँ इस प्रकार हैं -

1) मनुष्यों के शरीर प्रत्यक्ष दृश्य हैं, अग्नि वायु सूर्य आदि का शरीर प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं सिद्ध है, इस कारण उनका साकारत्व नहीं स्वीकार ने योग्य है।

2) स्तुति कृत उसी से देवों के शरीर होते हैं ये कारण अयुक्त हैं। क्योंकि वेद में अचेतनों की भी स्तुति विंहित है। जैसे - अक्षक्रीडा, ओषधिवृक्ष, पत्थर, उलूखमूषल इत्यादि का वर्णन प्राप्त है।

3) देव कर्म करते हैं इससे वे पुरुषवत् है ये युक्ति सही नहीं है क्योंकि अचेतन भी कर्म करते हैं ऐसा वेद में प्राप्त होता है। जैसे सोमरस के निष्कासन के लिए जो पत्थर के टुकड़े थे उनके लिए कहा गया है -'अभिक्रन्दति हरितेभिरासभिः' इति। एक अन्य जगह भी कहा है -'होतुश्चित् पूर्वं हविरद्यमाशते' यहां पत्थर के टुकड़े होता से पहले ही हवि का भोग करते है, ऐसा कहा है।

4) पुरुष भोग्य द्रव्य ही देवों के साकारत्व को प्रमाणित नही कर सकते हैं, क्योंकि वेद में अपुरुषविध अशरीरि भी पदार्थ में भोग्यद्रव्यों का प्रयोग करते दिखते है, यथा 'सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्मिन्' यहाँ नदी और रथ योजना की कथा कही गई है।

टिप्पणी

जैमिनी के मत में तो देवों का अलग रूप नहीं है। मन्त्रमयी देवता हैं। मन्त्र को छोड़कर देवों की पृथक् सत्ता नहीं है। यज्ञादि क्रिया में जब मन्त्र उच्चारित होते हैं तब मन्त्ररूप में देवों का आविर्भाव होता है। इस मत के समर्थन करते हुए उक्ति भी कही गई है की देवों का पृथक रूप से शरीर होता है यदि एक ही क्षण में भिन्न-भिन्न यज्यों में एक साथ सम्पूर्ण यज्ञ में उपस्थिति सम्भव नहीं है। इसलिए उसे मन्त्रमयी स्वीकार किया है। इससे यह पता चलता है की उनका मन्त्रोच्चारण काल में ही आविर्भाव होता है। महाभाष्यकार भी इसीलिये कहते है - 'एक इन्द्रशब्दः क्रतुशते प्रादुर्भूतः' इति। वेदान्त दर्शन में वेदव्यास ने तथा पूर्वमीमांसास्थ जैमिनि इससे समर्थित नहीं हैं। शङ्कराचार्य भी ब्रह्म सूत्र भाष्य में वेदव्यास को समर्थन देते है।

पाठगत प्रश्न

729. साकार शब्द के दो पर्यायवाची लिखो।

730. कुछ संवाद सूक्त के नाम लिखो।

731. 'अचेतनानां स्तुतिः' विहिता इसका क्या तात्पर्य है ?

732. देवों के साकारत्व के विषय में जैमिनि का क्या मत है ?

7.5 इन्द्र का स्वरूप

इदि-धातु से निष्पन्न इन्द्र शब्द परमेश्वर वाचक है। इन्द्र सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, शासक, स्थावर और जङ्गम के तथा चेतन अचेतन पदार्थ के नियन्त्रक हैं। वेद के देवों में इन्द्र का स्थान महत् है। गुरुत्व, महिमाशाली, शौर्य और वीर्य और सूक्त संख्या में इन्द्र अद्वितीय हैं। ऋग्वेद में प्रायःदो सौ सूक्तों द्वारा इन्द्र का आह्वान किया है। उसका रूप वर्णन भी ऋषियों ने किया। वो अधार ओष्ठ से चारु, नासिका से उन्नत, और वर्ण से उज्ज्वल है। वैदिक काल में आर्यों की शरीराकृति कैसी थी इस विषय में विद्वान् इन्द्र का रूप वर्णन दिखाकर ही सिद्धान्तमत को पुष्ट करते है। कपिशवर्ण से युक्त अश्व उसके रथ को ले जाते हैं। त्वष्टा एक सहस्र सुवर्ण वज्रों को बनाकर उसको समर्पित करता है। उन वज्र राशि से उसने असुरों का नाश किया।

सम्वर-अहि-वृत्र-अर्वुद-विश्वरूप आदि असुरों का इन्द्र ने नाश किया। वृत्र ने जल को रोका इसलिए इन्द्र में उसका नाश कर धरा पर जल गिराया। इन्द्र स्थल पर अश्व से तथा नदी में नाव से चलते हैं। उसके शत्रुओं द्वारा अजेय व् नए-नए दुर्गों में कुछ लौह से, और कुछ पत्थरों से निर्मित थे। ये देवों के अधिपतित्व का वर्णन है। इन्द्र सोम को आनन्द से पीता है सभी सूक्त में कीर्ति व्याप्त है। उसकी पत्नी इन्द्राणी या शची है। और वह नाना वर्ण से युक्त परिधान धारण करती है। इद्र का अन्य एक नाम शतक्रतु

भी है। क्रतु शब्द का अर्थ यज्ञ या कर्म है। शतक्रतु इसका अर्थ अनन्त कर्म कर्ता हुआ। इन्द्र युद्ध जय, असुर वध, दुष्टों का नाशक, जल निष्कासन इत्यादि कर्म करता था। बलवीर्य के सभी सर्व कर्म इन्द्र के ही है। और कहते है –'या च का च बलकृतिः इन्द्रकर्मैव तत्' इति। वृत्र का हन्ता वह ही है, अतः वृत्रघ्न नाम भी है। उपासकों के प्रति वह दयालु है तथा उनको बहुत धन देता है। अतः मघवा नाम भी है।

इन्द्र के सभी सूक्त त्रिष्टुप में ही हैं। त्रिष्टुप्छन्द, अन्तरिक्ष लोक, माध्यन्दिन सोम सवन, ग्रीष्मऋर्तु, सोमपान, वीरत्व पूर्ण कर्म, असुर वध ये सब विषय इन्द्र के साथ नित्य सम्बद्ध है। इन्द्र का असुर वध ऐतिहासिक वृत्तान्त और प्राकृतिक विघ्न चिह्न इन विषयों में विद्वत्सभा में नाना मत है। कुछ इन्द्र का असुर वध को आर्यों द्वारा अनार्य के वध का प्रतीक कहते हैं, और कुछ सुर्य द्वारा असुरनाश भी कहते हैं। अन्य कुछ असुर के साथ मेघ का तथा इन्द्र के साथ वज्र-विद्युत्-वायु का समावेश करते है।

पाठगत प्रश्न

733. इन्द्र शब्द किस धातु से निष्पन्न है ?

734. इन्द्र के अश्व किस वर्ण के हैं ?

735. इन्द्र की पत्नी कौन है ?

736. इन्द्र का शतक्रतु नाम करण क्यों हैं ?

737. इन्द्र के स्तुतिपरक सूक्त किस छन्द में रचित है ?

738. इन्द्र का वृत्रघ्न ये नामकरण क्यों है?

739. इन्द्र को क्यों मघवा कहा जाता है ?

7.6 अग्नि स्वरूप

इन्द्र से परम तथा गुरुत्व दृष्टी में अग्नि का नाम आता है। ऋग्वेद में दो सौ सूक्त से अग्नि का आवाहन और स्तुति विहित है। उसका आनन और पृष्ठ देश घृतवर्ण से युक्त है। केशराशि स्फुलिङ्ग वर्ण युक्त है। 'मश्रु पीले रंग से युक्त है। दन्तपङ्क्ति सुवर्ण के समान चमकदार हैं। देवों में यह निकटतम हैं (अग्निर्वै देवानामवमः)। देवसाक्षात् रूप से हवि ग्रहण नहीं करते हैं, अग्नि द्वारा ही देव हवि का आस्वादन करते हैं। अतएव अग्नि को देवों का मुख कहा है (अग्निर्वै मुखं देवानाम्)। वैदिक आर्यों के गृह में गार्हपत्याग्नि होती थी। अग्नि का रथ हिरण्य वर्णीय और उज्ज्वल है। कपिश वर्णीय अश्व उसके रथ को ले जाते हैं। ये देवों का प्रतिनिधि है, पुरोवर्ती होकर देवों का आह्वान करता है, इसलिए वह पुरोहित कहलाता है। होता, अधवर्यु, पुरोहित और ब्रह्मा ये चार नाम

टिप्पणी

अग्नि को उद्देश्य करके प्रयुक्त हैं। द्युलोक-भूलोक-अन्तरिक्षलोक सर्वत्र ही इसका गमन है। ऋग्वेद के आदिसूक्त अग्निसूक्त से ही अग्नि की प्रधानता स्पष्ट हो जाती है। दो अरणि के घर्षण से अग्नि उत्पन्न होती है। इसी को ही अग्नि मन्थन कहा जाता है। अतएव दो अरणीयाँ पार्थिव अग्नि की माता-पिता कहलाती हैं। अग्नि के सभी सूक्त गायत्री छन्द में वर्णित/लिखित है।

पाठगत प्रश्न

740. अग्निमुखाः देवाः इति क्यों कहा गया है ?

741. अग्नि को पुरोहित क्यों कहा जाता है ?

742. अग्नि को उद्देश्य करके कौन सी संज्ञा प्रयुक्त होती है ?

743. ऋग्वेद का आदि सूक्त कौन सा है ?

744. अग्नि के मन्त्र कौन से छन्द में है?

7.7 वरुण का स्वरूप

ऋग्वेद के बारह सूक्तों में वरुण की स्तुति की गई है। ऋग्वेद के मुख्य देवों में से ये एक है। ये मित्र का सहचर, अतः समास प्रकरण में मित्रा-वरुणौ ये प्रयोग मिलता है। दिवसीय सूर्य का नाम मित्र है। रात्री कालीन सूर्य का नाम वरुण है। निरुक्त में वृ-धातु से वरुण शब्द निष्पन्न है। आवृणोति सतः पदार्थान् इति वरुणः। अतएव सूर्य रात्रि में भी रहता है ये आर्य जानते थे, ऐसा ज्ञात होता है, और भी ऐतरेय-कौषीतकि-पञ्चविंशब्राह्मण में ये विषय सुस्पष्ट उल्लिखित है। वरुण नैतिकी जगत में नियम का रक्षक है। उसी के नियन्त्रण से सूर्य-चन्द्र-नक्षत्रादि अपनी कक्षा में ही घूमते हैं। अतएव धृतव्रत, धर्मपति उसी की संज्ञा है। विहगऊर्ध्व को जहाँ जाते है, दिक्चक्र वाले पोत जहां जाते है, सब वह देखता है। रात्रि में चौर्य-व्यभिचारादि पाप उससे परोक्ष नहीं होते है। अतएव वरुण के तुष्ट होने पर पाप नष्ट होते हैं। अतएव उसको आर्य सम्राट् या चर कहते है।

पाठगत प्रश्न

745. वरुण शब्द किस धातु से निष्पन्न है ?

746. सूर्य का दिवस में और रात्रि में दो नाम क्या है ?

747. सूर्य चन्द्रादी को कक्ष में घुमने से कौन नियन्त्रित करता है ?

748. वरुण को चर क्यों कहा जाता है ?

7.8 रुद्र का स्वरूप

ऋग्वेद में रुद्रदेव का स्थान माहात्म्य इन्द्र-अग्नि-वरुणादि देवों की अपेक्षा बहुत न्यून है। किन्तु यजुर्वेद और अथर्ववेद में रुद्रदेव का स्थान अतीव महत्त्वपूर्ण है। यजुर्वेद में एक सम्पूर्ण अध्याय रुद्रदेव सम्बन्धि है। और वह अध्याय रुद्राध्याय कहलाता है। जन्म के बाद ये देव रोया था इसीलिये रुद्र का रुद्रत्व कारण है। और कहा भी है - ''स जात एवारोदीत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्'' इति।

यजुर्वेदीय रुद्राध्याय के अनुसार रुद्र एक बलवान् सुसज्जित योद्धा है। रुद्र के हस्त में सुवर्ण निर्मित धनुष और बाण हैं। उसका धनु सहस्र जनों को भी मारने में समर्थ है। और उसके हाथ में कृपाण है। ये सभी वज्रायुध उसके हाथ में सर्वदा सुशोभित होते है। शरीर के रक्षण के लिए उसके शिर पर छत्र रखा है और चर्मवस्त्र से आच्छादित हैं। रुद्रदेव का धनु सर्वदा ही बाण सहित ही रहता है। उसके आयुध इतने भयङ्कर हैं कि ऋषि भी इनसे अपने प्राण, पुत्र-पौत्र गो, अश्वादी प्राणियों की रक्षा के लिए सर्वदा प्रार्थना करते हैं। इसलिए यजुर्वेद में कहा है - ''मा न स्तोके तनये मा न आयुषि मा न गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः''।

ऋग्वेद में रुद्रदेव की बलशालित्व के कारण स्तुति है। ये स्वर्ग के रक्त वाराह कहलाते हैं। वह मरुतों का पिता है। रुद्र का रूप सौन्दर्य भी बहुत जगह प्राप्त होता है। साथ ही उसकी बाहू बलिष्ठ, देह आदित्य के सामान चमकती हुई, सुवर्ण निर्मित आभूषणों से भूषित उसकी देह, कनक कान्ति से युक्त जटा कलाप है। इसके त्री अम्बक अर्थात् लोचन है। अम्बकत्रय होने से इसका नाम त्र्यम्बक है। जटावत्व के कारण कपर्दी भी कहते है। ''इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने'' इति श्रुति। अनेक रूप धारण करने से रुद्र को पुरुरूपः भी कहते है।

जिस रुद्रदेव का संहारक रूप प्राप्त होता है वैसे ही उसकी शिवमूर्ति भी बहुत जगह प्राप्त होती है। वह सभी वैद्यों में श्रेष्ठ वैद्य है। ''भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि'' इति श्रुति। ऋग्वेद में भी कहा है ''शतं हिमा अशीय भेषजेभिः'' इति। अर्थात् तेरे द्वारा प्रदत्त औषध से मैं भली प्रकार सौ वर्ष तक जीवित रहूं। वेद में रुद्र को भयंकर से भयंकर कहा है तो वहीं उसे शिव से शिवतर अर्थात् कल्याणकारी भी कहा है।

पाठगत प्रश्न

749. रुद्र के रुद्रत्व का क्या कारण है ?

750. क्यों रुद्र को त्र्यम्बक कहा जाता है ?

751. किसका नाम कपर्दी है ?

752. रुद्र के भिषक्तव अर्थात वैद्य का प्रमाण किस श्रुति में मिलता है ?

753. रुद्राध्याय किस वेद में है ?

7.9 अश्विन का स्वरूप

द्युलोक के दो देव हैं, अश्विनौ। ये परस्पर यमज या युग्मक है। अश्वाः अनयोः सन्ति इति अश्विनौ। ये दीप्तिमान और कमल मालाधारी हैं। ये अधिक मधु पीते हैं। ऋग्वेद में अश्विनों को रुद्र और सिन्धु का पुत्र कहा है। वे दोनों पूर्व में राजा थे। परंतु पुण्यकर्म से देवत्व को प्राप्त कर लिया। सूर्य कन्या सूर्य ने स्वयम्बर सभा में अश्विनौ को पति रूप में परिगृहीत किया। अश्विनों के साथ सूर्या रथ से जाती है। उसका रथ मधुमय है। उसके रथ को कभी अश्व, कभी विहङ्ग, कभी वृषभ और कभी पक्षयुक्तहय अर्थात् गरुड़ ले जाते है। उषाकाल और सूर्योदय के मध्य में अश्विन का आविर्भाव होता है। अर्थात् उषा के आगमन के बाद ये उसका अनुकरण करते हैं।

विपत्ति में प्राणियों का रक्षण उनका मुख्यकर्म है। ऐसे ही एक बार समुद्र में भुज्यु नाम के राजा का पोत भङ्ग होने पर अश्विनों की प्रार्थना की और अश्विनों ने उस राजा की प्राण रक्षा की अत्रि को तमोमयकार गृह से छुड़ाया। इसीलिये ऋग्वेद में कहा है – ''ऋषीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति'' इति। न केवल मनुष्यों को अपितु मनुष्येतर प्राणियों की भी प्राण रक्षा वो ही करते हैं ऐसे ऋग्वेद में बहुत उदाहरण प्राप्त होते हैं। ऐसे ही एक बार वृक-वर्तिका-संग्राम में वर्तिका पक्षि की वृक् से रक्षा की तब ऋग्वेद में कहा – ''आस्नो वृकस्य वर्तिकाममीके, युवं नरा नासत्यामुमुक्तम्'' इति। स्वर्ग लोक के चिकित्सक रूप में ये दोनों बहुप्रसिद्ध हैं। इन दोनों को स्ववैद्य भी कहते है। इनकी चिकित्सा से अन्धे भी दृष्टि शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं। रोगी रोग मुक्त हो जाते हैं। अश्विनों ने ही च्यवन नाम के वृद्ध ऋषि को यौवन प्रदान किया।

पाठगत प्रश्न

754. अश्विन कौन हैं ?

755. ये अधिक क्या पीते है सोम या मधु?

756. अश्विन के पत्नी कौन है ?

757. अश्विनों का मुख्य कर्म क्या है ?

758. वृक-वर्तिका-संग्राम में अश्विनों ने किससे और किसकी रक्षा की ?

पाठसार

हमारा मानव जीवन जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र भेद से चतुर्विध होता है। वैसे ही वेदोक्त देवों का भी वर्ण भेद होता है। और कहा भी है महाभारत के शान्ति पर्व में-

आदित्याः क्षत्रियास्तेषां विशश्च मरुतस्तथा।
अश्विनौ तु स्मृतौ शूद्रौ तपस्युग्रे समास्थितौ॥
स्मृतास्त्वङ्गिरसो देवा ब्राह्मणा इति निश्चयः।
इत्येतत्सर्वदेवानां चातुर्वर्ण्यं प्रकीर्तितम्॥

वेद में प्रत्येक मन्त्र किसी न किसी देव को उद्देश्य करके ही प्रयुक्त है। वेद में अग्नि-वायु-इन्द्रादि देवों के तथा वाक्-उषा-आदित्यादि देवियों का वर्णन प्राप्त होता है। और वही भूलोक के देव में अग्नि, अन्तरीक्ष के देव इन्द्र, द्युलोक के सूर्य मुख्य देव है। यास्क मत में मुख्य देव अग्नि हैं तथा कात्यायन मत में मुख्य देव सूर्य हैं कुछ पण्डित देवों का साकारत्व तथा कुछ निराकारत्व प्रतिपादन करते हैं। वेद में मुख्यतया वर्णित इन्द्र अग्नि वरुण देवों का विस्तृत रूप से व्याख्यान प्राप्त होता है। रुद्र भी वेद में बहुत से मन्त्रों से प्रशंसित हैं और परस्पर यमज अश्विनी कुमार विपत्ति में प्राणियों की रक्षा करते हैं, उनके विषय में भी संक्षेप से ज्ञात होता है इस पाठ में।

पाठान्त प्रश्न

759. संक्षेप से देवों का विभाजन करो ?

760. वरुण का स्वरूप लिखो।

761. अग्नि का स्वरूप लिखो।

762. इन्द्र का असुरवध इससे क्या-क्या द्योतित होता है ?

763. इन्द्र का माहात्म्य वर्णन करो।

764. इन्द्र के रूप का वर्णन करो।

765. देवों का साकारत्व युक्ति पूर्वक बताओ।

766. वेदों का मन्त्रमय शरीरत्व प्रमाणित करो।

767. सूर्य के स्थान भेद से नाम कैसे भिन्न है ?

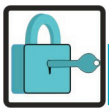

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

टिप्पणी

देवताओं का सामान्य परिचय

768. शौनक द्वारा

कुछ देव अग्नि, वायु, इन्द्र, सूर्य, विष्णु, सोम, वरुण, पूषा, मरुत्, रुद्र, सविता, अर्यमा, अपान्नपात्, अश्विन, आदित्य, द्यौ, ऋभु, यम इत्यादि।

769. कुछ देवियाँ वाक्, उषा, अदिति, रात्रि, पृथ्वी, सरस्वती, श्री, धिषणा आदि अनेक।

770. मित्रावरुणौ, इन्द्राग्नी, सूर्याचन्द्रमसौ, द्यावापृथिव्यौ, अग्नीषोमौ इत्यादय

771. गोष्ठिवाचकत्व तथा बहुदेवता वाचकत्व से

देवों का विभाजन

772. अग्नि, आप, पृथ्वी तथा सोम भूलोक के देव है और इन्द्र, मरुत्, अपान्नपात् (विद्युत्), पर्जन्य अन्तरिक्ष के देव हैं।

773. सूर्यः मित्रः, वरुणः, द्युः, पूषा, सविता, आदित्यः, अश्विनी कुमार, ऊषा, रात्रि इत्यादि देव द्युलोक के है

774. असून् प्राणान् राति ददाति इति असुरः, प्राणदेने वाला वह परमात्मा ही है।

775. तीन ही देवता है नैरुक्तकार के मत में

776. अग्नि पृथ्वी स्थान वायु और इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानीय सूर्य द्युस्थानीय इति।

777. वायु के मातरिश्वा, इन्द्र, रुद्र, अपान्नपात् अनेक हैं।

778. अग्निर्वै देवानामवमः इति।

779. रुद्र।

780. शिवाय च शिवतराय च

देवताविषय में आचार्य यास्क का मत और कात्यायन मत

781. सूर्य और इन्द्र अग्नि की ही अभिव्यक्ती है ऐसा मानकर अग्नि ही एक व अभिन्न देव है ऐसा निरूपण करते हुए यास्क ने ऋग्वेद में उद्धृत किया है –'तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे' इति (10.88.10)।

782. ये अग्नि भूत लोक में ऋषियों द्वारा स्तुतियों से याद किया जाता है। जात वेदास्तुति के मध्य में तथा वैश्वानर दिन में।।

783. अग्नि से जैसे सूर्य का जन्म वैसे सूर्य से आदित्य का जन्म हुआ

देवताओं का आकार चिन्तन-

784. शारीरिक, और पुरुषविध।

785. संवाद सूक्त जैसे सरमापणि संवाद, ऊर्वशी पुरुरवा संवाद, यमयमी संवाद इत्यादि

786. यथा अक्षक्रीडा, ओषधिवृक्ष, प्रस्तर, उलूखमूषल इत्यादि का वर्णन वेद में प्राप्त होता है।

787. देवों का पृथक्तया रूपादि नहीं है।

इन्द्र का स्वरूप

788. इदि-धातू से निष्पन्न।

789. कपिश वर्णीय।

790. इन्द्राणी या शची।

791. शतक्रतु का अर्थ अनन्त कर्म कर्ता। इन्द्र युद्धजय, असुरवधा, दस्युओ का नाश, जलसंवादसूक्त यथा सरमापणि संवाद, ऊर्वशीपुरुरवा संवाद, यमयमी संवाद इत्यादि का निष्कासन कर्म करता है।

792. त्रिष्टुप्छन्द से।

793. वृत्र का हन्ता है वह।

794. उपासकों के प्रति वह दयालु तथा उनको बहुत धन देता है।

अग्नि का स्वरूप-

795. देव साक्षात् हवि नहीं खाते है, अग्नि द्वारा ही देव हवि का आस्वादन करते है।

796. देवों का यह प्रतिनिधि है, पुरोवर्ती होकर देवों का आवाह्न करता है।

797. होता अधवर्यु पुरोहित तथा ब्रह्मा ये चार संज्ञा है।

798. अग्निसूक्त।

799. गायत्री छन्द में।

वरुणस्वरूप

800. वृ धातू से

801. मित्र और वरुण।

802. वरुण द्वारा।

803. वह दिवस में धरा पर जहां कही भी होता है, सब कुछ देखता है, और भी रात में चौर्य-व्यभिचारादि पाप उसकी आखों से परोक्ष में नही होता है, इसलिए उसको सम्राट् या चर कहा जाता है।

इन्द्रस्वरूप

804. जन्म के बाद ये देव रोया था अतः वह रुद्र कहलाया।

805. तीन अम्बक होने से त्र्यम्बक कहलाता है।

806. जटावान होने से रुद्र का नाम कपर्दी है।

807. ''भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि'' इति श्रुति।

808. रुद्राध्याय यजुर्वेद में है।

अश्विन का स्वरूप

809. अश्विन द्युलोक के दो यमज युग्मक देव है।

810. मधु पीते है।

811. सूर्य की कन्या सूर्या है।

812. विपत्ति में प्राणियों की रक्षा उनका मुख्य कर्म है।

813. वृक-वर्तिका-संग्राम में अश्विनों ने वृक से वर्तिका की रक्षा की।

सातवां पाठ समाप्त

वैदिकसूक्त

भूमिका

इस जगत में कीट पतङ्ग से लेकर सभी प्राणियों की सुख प्राप्ति और दु:ख परिहार के लिए दो प्रवृत्तियां रात दिन देखी जाती हैं। सुप्रसिद्ध और सर्वविदित जो सुख अच्छे कर्मानुष्ठान से उत्पन्न होते हैं। दु:ख बुरे कर्मानुष्ठान से उत्पन्न होते हैं। और उसके अनुष्ठान के बिना कर्म स्वरूप का ज्ञान नहीं होता है। अत: सुख की इच्छा दु:ख की अनिच्छा के लिए पुरुष को अवश्य ही पहले कर्मों के स्वरूप का शोभनीयत्व और अशोभनीयत्व जानना चाहिए। उस ज्ञान के बिना वेदार्थ ज्ञान दुष्कर है। अत: विद्वानों के द्वारा वेद के अर्थ अध्येय, और विचारणीय हैं। और वह वेद ऋक् यजु साम अथर्व भेद से चार प्रकार से विभक्त हैं। कहीं-कहीं पर तीन प्रकार भी दिखाए गये हैं। प्रत्येक वेद भी अनेक शाखाओं से युक्त हैं। उन शाखाओं में प्रत्येक मन्त्र ब्राह्मण भेद से विभिन्न हैं। वहाँ मन्त्र वैदिक तत्त्वों में प्रसिद्ध कर्म समवेतार्थ स्मारणैक फल हैं। और विधिबोधक वाक्य की ब्राह्मण संज्ञा है। विधि कर्मों के इष्ट साधनत्व बोधन मुख से इष्ट साधन में पुरुष को प्रवर्तित करता है। निषेध तो अनिष्ट साधन भत बोधन मुख के द्वारा अनिष्ट साधन से निवर्तित करता है। और ब्राह्मण भी कर्म ब्राह्मण, उपसना ब्राह्मण और ज्ञान ब्राह्मण तीन भागों में विभक्त है। कर्म काण्ड में भी नित्य नैमित्तिक काम्य के भेद से तीन कर्म विख्यात हैं। इन कर्मों से ज्ञान संपत्ति के लिए वेदार्थ ज्ञान की अपेक्षा है।

भारत वर्ष में वेद की संहिता ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषदों का महद् वैशिष्ट्य है। संस्कृत पाठशाला और महाविद्यालय वेद के अध्ययन और अध्यापन के ग्राहक हैं। इस पाठ्यांश में मन्त्रों और पदपाठ व्याख्या का सम्यक् समावेश है। ऋग्वेद के सारसंग्रहों का परिचय भी यहाँ प्राप्त करेंगे। इस सूक्ताध्ययन से अध्येताओं का महान् उपकार हो, बहुत प्रयत्न और उत्तमता से इसका अध्ययन छात्र करें, वेद का व्याकरण लौकिक व्याकरण से भिन्न है। शब्द भी बहुलता से भिन्न होते हैं। स्वर भेद में अर्थ भेद होता है। प्रकरण भेद में भी अर्थ भेद होता है। काव्यात्मक शैली बहुत जगह वेद में परिलक्षित है। अत: मन्त्रों का सामने से जो अर्थ दिखाई देता है उससे भिन्न ही अर्थ होता है। व्याख्या के भेद से भी अर्थ में भेद होते हैं। तात्पर्य भेद से भी अर्थ में भेद होता है। अत: मन्त्रों का यही अर्थ है यह निर्णय सुदुष्कर ही है। तथापि प्रमाण भूत आचार्य श्रीमान सायण का भाष्य ही कुछ सुबोध के लिए परिवर्तन से छात्रोपयोगित्व समास आदि यहाँ दीये जाते हैं। मन्त्रान्वय, मन्त्रव्याख्या, मन्त्र का सरलार्थ, कुछ शब्दों का व्याकरण इस रूप से यहाँ मन्त्र की व्याख्या की गयी है।